1 भाषा और व्याकरण
(Language and Grammar)

मन के भावों को अभिव्यक्त व ग्रहण करने का एक सशक्त माध्यम है 'भाषा'। इसकी सहायता से हम सामाजिक जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इसी के माध्यम से हम अपना और अपने समाज में ज्ञान का विकास कर सकते हैं। भाषा के अभाव में समाज की कल्पना भी कर पाना संभव नहीं है। भाषा के माध्यम से समाज में हम एक-दूसरे के करीब आते हैं।

भाषा दिव्य वरदान है। इसके प्रयोग में सावधानी बरतना अति आवश्यक है। वैसे तो संकेतों के माध्यम से भी गूँगा व्यक्ति अपने विचार दूसरों तक पहुँचाने का कार्य करता है, लेकिन भाषा की शक्ति से रहित उसके संकेत, उसके हर भाव को दूसरों तक पहुँचाने में असमर्थ होते हैं। इसलिए व्याकरण में संकेतों का अध्ययन नहीं किया जाता।

मनुष्य, दूसरे मनुष्यों तक अपनी इच्छा और भावों को व्यक्त करने के लिए जिन ध्वनि-संकेतों को व्यवहार में लाता है, उसे भाषा कहा जाता है। भाषा विचारो, भावों के परस्पर आदान-प्रदान का समर्थ साधन है, जिसे बोलकर या लिखकर मनुष्य अपने विचार दूसरों तक पहुँचाता है और दूसरे के विचारों को सुनकर या पढ़कर ग्रहण करता है।

विश्व के सभी देशों में भिन्न-भिन्न भाषाओं का प्रचलन है; जैसे– जापान में जापानी, रूस में रूसी, मिस्र में अरबी, फ्रांस में फ्रेंच, ब्रिटेन में अंग्रेजी, चीन में चीनी, पाकिस्तान में उर्दू तथा भारत में हिंदी। हमारे देश की राष्ट्रभाषा 'हिंदी' है। भारत विविधाताओं का देश है। यहाँ विभिन्न राज्यों में विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। संस्कृत हमारी सबसे प्राचीन भाषा और विश्व की सबसे पहली भाषा है। संस्कृत भाषा से अनेक भाषाओं का उद्‌गम हुआ है। भारत के सांविधान में कुल बाईस भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। उनमें से प्रमुख हैं– हिंद, कश्मीरी, डोगरी, उर्दू, पंजाबी, असमिया, बँगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, संस्कृत और सिंधी आदि।

भाषा के निम्नलिखित दो रूप प्रमुख हैं :

1. मौखिक भाषा– भाषा का मौखिक रूप उसका मूल रूप है। व्यक्ति जब आमने-सामने बातचीत करता है, भाषण देता है, कहानी या कविता सुनाता है, टेलीफोन से बात करता है या अभिनय द्‌वारा अपने भावों को अभिव्यक्त करता है तो इनमें प्रयोग की जाने वाली भाषा 'मौखिक भाषा' कहलाती है। इसका इतिहास बहुत पुराना है। श्रोता भाषा के इस रूप को सुनकर समझ लेता है।

2. लिखित भाषा– जब व्यक्ति आमने-सामने अपने विचारों को व्यक्त करने में असमर्थ होता है। तो वह लेखनी का सहारा लेता है। दूर रहने वाले मित्रों या संबंधियों को पत्र लिखकर, कविता या कहानी लिखकर जब वह अपने भावों या विचारों को व्यक्त करता हैं तो वह भाषा के लिखित रूप का प्रयोग करता है। भाषा के इस रूप को पाठक पढ़कर समझता है।

बोली (Dialect)

परिभाषा– भाषा के स्थानीय या क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं।

बोली का रूप स्थायी नहीं होता, वह बदलता रहता है। इसका प्रयोग केवल 'बोलने' के लिए होता है। जब बोली में साहित्य का निर्माण होने लगता है, तो बोली भाषा का रूप धारण कर लेती है। ब्रज और अवधी में लिखा गया साहित्य इस बात का उदाहरण है।

Scanned with CamScanner

लिपि (Script)

मौखिक भाषा में हम ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। मुख से उच्चारित इन ध्वनियों को लिखित रूप में बदलने के लिए 'लिखित-चिह्नों' या वर्णों का सहारा लिया जाता है। ये वर्ण 'अक्षर' भी कहलाते हैं।

परिभाषा– वर्णों या अक्षरों को लिखने के ढंग को 'लिपि' कहा जाता है।

प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है। हिंदी की लिपि का नाम देवनागरी, अंग्रेजी की लिपि का नाम रोमन, पंजाबी की लिपि का नाम गुरुमुखी तथा उर्दू की लिपि का नाम फारसी है।

व्याकरण (Grammar)

प्रत्येक भाषा के कुछ नियम होते हैं। जो शास्त्र इन नियमों की जानकारी देता है, उसे व्याकरण कहते हैं। इन्हीं नियमों के आधार पर हम भाषा के शुद्ध तथा अशुद्ध रूप को निर्धारित करते हैं।

परिभाषा– व्याकरण हमें भाषा को शुद्ध बोलना, पढ़ना और लिखना सिखाता है।

व्याकरण ऐसा शास्त्र है जो भाषा के वर्णों, शब्दों, वाक्यों के शुद्ध रूप का ज्ञान कराता है।

Scanned with CamScanner

1. सही उत्तर के सामने (✓) चिह्न लगाइए–

(क) मन के भावों को अभिव्यक्त व ग्रहण करने का एक सशक्त माध्यम है–

(i) स्वर ☐ (ii) व्यंजन ☐ (iii) भाषा ☐

(ख) वर्णों या अक्षरों को लिखने के ढंग को कहते हैं–

(i) भाषा ☐ (ii) लिपि ☐ (iii) व्याकरण ☐

(ग) संस्कृत हमारी–

(i) राष्ट्रभाषा है। ☐ (ii) सबसे अच्छी भाषा है। ☐ (iii) सबसे प्राचीन भाषा है। ☐

(घ) व्याकरण के प्रमुख अंग हैं–

(i) वर्ण-विचार ☐ (ii) वाक्य विचार ☐ (iii) उपर्युक्त सभी ☐

2. भाषा की परिभाषा दीजिए।

3- मौखिक और लिखित भाषा में क्या अंतर है?

4- लिखित भाषा की क्या विशेषताएं हैं?

5-व्याकरण किसे कहते हैं?

Scanned with CamScanner